दिनांक 26 ग्रंगैल, 1985

सं. भ्रो.वि./फरीदाबाद/38-85/18700.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं. रवड़ वेज 13/3, मथुरा रोड़, फरीदाबाद, के श्रमिक श्री राम सिंह तथा उसके प्रबन्धकों के मण्य इसमें इसके वाद लिखित मामले में कोई श्रीद्योगिक विवाद है;

शीर चूंकि इरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसलिए, भ्रम, भीटोगिक विवाद श्रिविनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के रहण्यपाल इसके द्वारा सरकार के श्रीविस्चना सं. 5415-3-श्रम, 68-15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए श्रिविस्चना सं. 11495-जो-श्रम-88-श्रम/57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958, द्वारा उक्त श्रीविनियम की धारा 7 के श्रीवीन गठित श्रम न्यायालय. फरीदावाद, को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय के लिये निर्दिश्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रीमकों के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत श्रयवा संवंधित मामला है :--

क्या श्री राम लिह की सेवाओं का समापन त्यायोचित तथा ठीक है। यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं श्रो वि । भिरी दाबाद | 39-85 | 18707. — चूंकि हरियाणा के राज्यपाल कि राय है कि मै. रबड़ बेज 13/3, मथुरा रोड़, फरीदाबाद के श्रमिक श्री रामा कान्त तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीधोगिक विवाद है;

श्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं ;

इसलिये, ग्रव, भौद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947, की धारा 10 की उप-धारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकार के ग्रिधिसूचना सं. 5415-3-श्रम 68-15254, दिनांक 20 जून, 1968, के साथ पढ़ते हुए ग्रिधिसूचना सं. 11495-जी-श्रम-88-श्रम/57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7 के ग्रिधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदावाद को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय के लिये निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिकों के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत भ्रथवा सम्बन्धित मामला है :--

क्या श्री रामा कान्त की सेवामों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह विस राहत का हकटार है ?

सं. मो. वि./फरोदाबाद/40→85/18714 — चूंकि हरियाणा के ब्राज्यपाल की राथ है कि मैं. रवड़ बेज 13/3, मधुरा रोड़, फरोदाबाद के श्रमिक श्री श्याम सिंह तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके वाद लिखित मामले में कोई श्रीद्योगिक विवाद है;

ग्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हैत् निर्विष्ट करना बांछनीय समझते हैं ;

इसलिये, अब, श्रौशोगिक विवाद अधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्ति में का प्रयोग करते हुए हरियामा के राज्यवाल इसके द्वारा सरकार के श्रिधिसूचना सं० 5415—3-श्रम 68—15254, दिनांक 20 जून, 1968 के संथ पढ़ते हुए अधिज्ञचना मं. 11495—जी—श्रम—88-श्रम/57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त प्रधिनियम की धारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदावाद, को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय के लिये निर्दिश्ट करने हैं, जो कि उक्त प्रयन्धकों तथा श्रमिशों के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत ग्रथवा सम्बन्धित मामला है :——

क्या श्री श्याम निंह की सेवाओं का समापन न्योयोजित तथा ठोक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हक्कदार है ?

सं. ब्रो.वि./फरीदाबाद/11-84/1872!.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मै० गुड़ईयर इण्डिया लि. वलवाढ़। (2) मैं अर्ज एत. एन. तनेजा एण्ड कन्मपती. गांव मुजेसर सैंक्टर 23 फरीदाबाद, के श्रमिक श्री सुरेन्द राम स्वरूप तथा उसके प्रवन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई बौद्योगिक विवाद है;

भीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्याय निर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं ;

इसलिये, ग्रव, ग्रोग्रोगिक विवाद ग्रिविवियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के बुखण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तियों का प्रग्रोग करते हुए, हरियाणा के राज्यमाल दिसके द्वारा सरकारी ग्रे ग्रिविवियम सं. 5415—3-श्रम, 66—15214, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए ग्रिविस्चना किं. 11495—जी—श्रम १ 88-श्रम/57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1158 द्वारा उक्त ग्रिविवियम को ग्रारा 7 के निर्मान गरित बुश्म न्यायालय, फथोदाबाद को विवादग्रस्त या उससे संबंधित नीचे लिखा मानला न्यायित गर के लिए निर्दिश्च करते हैं, जो कि उक्त प्रवत्यकों तथा श्रीमिक के बीच या ति विवादग्रस्त मानला है या विवाद से सुसंगत ग्रथवा संबंधित मानला है:—

वया श्री सुरेन्द की सेवामों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है]? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकवार है? 📆

सं. मो. वि करोदाबाद / 72-85 / 19144 - चूंकि हिरियाणा के राज्यपाल की राम है कि मैं वि वी० फोरजिम्ज प्रा० लि०, फरोदाब द, के श्रविक श्रो रंग नाय यादव तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामसे में कोई ग्री छोगिक विवाद है;

भीर चूंकि इरियाणा के राज्यपाल विवाद की न्यायनिर्णय हेतु विनिदिष्ट करना बांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, अब, ओशोगिक निवाद प्रधितियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई जिस्सी का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी श्रीधसूचना सं. 5415—3—थन/60/15254, दिनांक 20 चून, 1968, के साथ पढ़ते हुए अधिसूचना सं. 11495—जी-अम→68/अम/57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त श्रीधिनियम की धारा 7 कि प्रवीन गठित अम क्यायालय, फरोदाबाद, को विवादशस्त या उससे मुसंगत या उससे सम्बन्धित लीचे लिखा पामला न्यायित गैय हेनु निर्दिश्य करते हैं, जो कि प्रवत्त्रकों नया अभिक के बीच या जो विवादशस्त मामला है | या विवाद से सुवंगत या संबंधित मामला है :—

क्या श्री रंग नाथ यादव की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं.भो.वि./फरीदाबाद/72-85/19151.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं. डी॰डी फोरजिंग्स प्रा. ल., फरीदाबाद, केश्रमिक श्री लाल मन यादव तथा उसके प्रअधकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई भौद्योगिक विवाद है :

भीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद की न्यायनिर्णयं हेतु निर्दिग्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसलिये, अब, औद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा अदान की गई शक्तियों का अयोग करते हुये, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं 5415—3श्रम/60/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए अधिसूचना सं 11495—जी- श्रम- (8- श्रम/57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उवत अधिनयम की धारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय परीदाबाद, को विवाद प्रस्त या उससे सुसंगत या उससे संबंधित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय के लिये निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उवत प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवाद प्रस्त मामला है या विवाद से रूस गत श्रथवा संबंधित मामला है :—

क्या श्री लालमन यादव की सेवाओं का समापत ृत्यायौचित तथा हैं ठीक हैं है है है हैं यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं. भो. वि./फरीदाबाद/72-85/19158.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं. डी. डी. फोर्जिंग्ज प्रा. लि. फरीदाबाद, के अधिक भी पित जतम तक उसके प्रवन्तकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामने में कोई भौबोधिक विवाद है;

भोर चूँकि हरियाणा के राज्यपान विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसलिए, ग्रव, गीद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के छंड (ग) द्वारा प्रवान की गई कित्वों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी प्रधिसूचना छं 5415-3श्रम/60/15254, दिनांक 20 जून, 1968, के साथ पढ़ते हुए श्रविसूचना सं० 11495-जी-श्रम-68-श्रम/57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त

भिष्ठितयम की भारा 7 के अभीन गठित श्रान न्यायालय, करीदाबाद, को विदादप्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित की ई कि खा मामला न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रीमक के बीच या तो विदादप्रस्त मामला है या विदाद से सुसंगत प्रथवा सम्बन्धिस मामला है:---

क्या श्री शिव जतन की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का इक्शार है?

सं श्रो शिव / करीद बाद / 72-85 / 19165 - चूं कि हरियाणा के राज्यताल की राय है कि मैं डी.डी. फौर्राज्य प्राव् लिं कि करीदाबाद, के श्रमिक श्री ईन्द्र देव राय तया उसके श्रवन्यकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई भौदोगिक विवाद है ;

भीर चूंकि हरियाणा के राज्यात विवाद को त्यायनिर्गय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसलिये, अब, भौद्योगिक विवाद-अधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं 5415—3श्रम — 60/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए अधिसूचना सं 11495—जी-श्रम—68-श्रम/57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7 के अशीन गठित श्रम न्यायालय, फरोर वार, को विवादप्रस्त या उससे सुसगत या उससे संबंधित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय के लिए निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवाद ग्रस्त मामला है या विवाद से सुसगत भयवा संबंधित मामला है;

क्या श्री ईन्द्र देव राय को सेवामों का समाधान न्यायोचित तथा शेक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का इकदार है?

सं० मो० वि०/फरीदाबाद/72-85/19172.---चूंकि हरियाणा के राज्यवाल की दाय है कि मै० डी.डी.फोरिजिज प्रा० लि०, फरोदःबाद, के श्रमिक श्री ग'मंप्रताद तथा उसके प्रदम्बकों के मध्य इसमें दूइसके बाद लिखित मामले में कोई मौद्योगिक विवाद है ;

भीर चूंकि हरियाणा के राज्यसात विवाद को न्यायुनिर्णय हेतु निर्दिश्ट करना वाछंनीय समझते हैं ;

स्सिलिए, ग्रब, प्रोबोगिक विवाद अविनियम, 1947 की प्रारा 10 की उपवारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना छं० 5415-3श्रम-60/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए श्रिधसूचना सं. 11495-जी-श्रम-68-श्रम/57/11245, दिनांक 7 फरवरी; 1958 द्वारा उक्त प्रिधिनयम की धारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय, फरोदाबाद, को विवादप्रस्त या उससे सुसंगत या उससे संबंधित नीचे लिखा मामला न्याय निषय हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिक्त के बीच या तो विवादप्रस्त मामला है यो विवाद है से सुसंगत अथवा संबंधित मामला है :—

क्या श्री गाम। प्रशाद की सेवाफ्नों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकवार है?

ब्रिक्षं. श्रो.वि./फरीदाबांद/74-85/19179.--चूंकि हरियामा के प्राज्यसल की राय है कि] मैं. श्रोरियन्ट इलैक्ट्रीवल इन्सुलेमन, प्रा. लि., एन.ग्र'ई.टो., फरोदाब द, के श्रीमक श्रोन से लक्ष्मों वाई तया उसके प्रवन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रोद्योगिक विवाद है :

और चूंकि हरियाणा के राज्यसल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वाछनीय समझते हैं ;

इस लिये, अब औद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करने हुये, हरियाणा के राज्यान इसके द्वारा सरकारों अधिसूचना सं. 5415— अश्रम—68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुये अधिसूचना सं. 11495—जो. श्रम 88-श्रम 57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद को विवाद प्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय के लिये निर्दिश्ट करने हैं, जो कि उक्त प्रवन्ध को तथा श्रमिकों के बीच या तो विवाद प्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत अथवा सम्बन्धित मामला है:——

क्या श्रीमती लक्ष्मी बाई की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि महीं, तो वह किस राहत का हकदार है?